डॉ. सुजाता गुप्ता
व्याख्यान सं-१ हिंदी विभाग
स्नातक डिग्री२ पत्र ३

Page :
Date : / /

तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता का भाव-सौंदर्य

प्रस्तुत कविता 'कामायनी' के निर्वेद सर्ग से ही उद्धृत है। कवि जयशंकर प्रसाद ने मनोवैज्ञानिक तर्क के अधीन, मनु, श्रद्धा और इड़ा — के सांकेतिक विश्लेषण के द्वारा शैव दर्शन का गूढ़ अध्ययन प्रतिपादित किया है। नवीन कल्पनाओं और अनुभूतियों ने प्रसादजी के काव्य को 'छायावाद का अग्रदूत' बना दिया है। 'कामायनी' अपितु ना केवल छायावाद का प्रतिनिधि काव्य है, बल्कि उनकी काव्ययात्रा का चरमोत्कर्ष भी है।

इस कविता में मनु को संबोधित करते हुए श्रद्धा कहती है — हे प्रिय! मैं यहाँ तुम्हें भयंकर कोलाहल और कलह की स्थिति से बचाते हुए शांति पहुँचाने आयी हूँ। स्वयं कवि भी इस सांसारिक कोलाहल से व्यथित है और स्वयं की ही स्थिति को मनु के माध्यम से चित्रित कर रहे हैं। मनुष्य निरंतर कार्य करने के उपरांत, दिन-भर की भाग-दौड़ के पश्चात् जब वह थका, हुआ महसूस करता है, तब वह विश्राम करना चाहता है। आराम करके दिन-भर के शोर को, थकान को, शांति में बदलना चाहता है। श्रद्धा का नारी-हृदय अपनी शीतलता से मनु को शांति और विश्राम देता है। अर्थात् मनुष्य की सांसारिक उपापोह से अपनी चंचलता को उसका हृदय ही विश्राम प्रदान करता है। अर्थात् शारीरिक

Page :

Date : / /

को उसका हृदय ही शांत और संयमित करता है। श्रद्धा प्रातःकालीन उषा की भांति अपनी किरणों को चारों ओर प्रकाशवान बनाती है। निराशा से बोझिल मन में, उसके हृदय में आशा का संचार करती है। विषाद में डूबे हुए व्यक्ति को, मन को सदैव अपना दुःख उस सघन वन की भांति दिखाई देता है, जहाँ प्रकाश की एक किरण तक स्पष्ट ना हो। फिर, मनु को संबोधित करते हुए श्रद्धा कहती है, कि हे मेरे मनु। मैं जीवन की घाटियों की वह जलयुक्त वर्षा हूँ, जिसकी एक बूँद को तपते रेगिस्तान और तकता चातक तरसता है। मेरी उपस्थिति उस वर्षा की भांति है, जो इस विरहकुल मन को शीतलता प्रदान करती है।

पुनः श्रद्धा कहती है, जब हवा का झोंका बवंडर का निर्माण करता है, जिसमें हवा एक बंद

शेष अगले पृष्ठ पर.....